बातचीत

न. 07/2025 भारतीय थलसेना का प्रकाशन जुलाई 2025

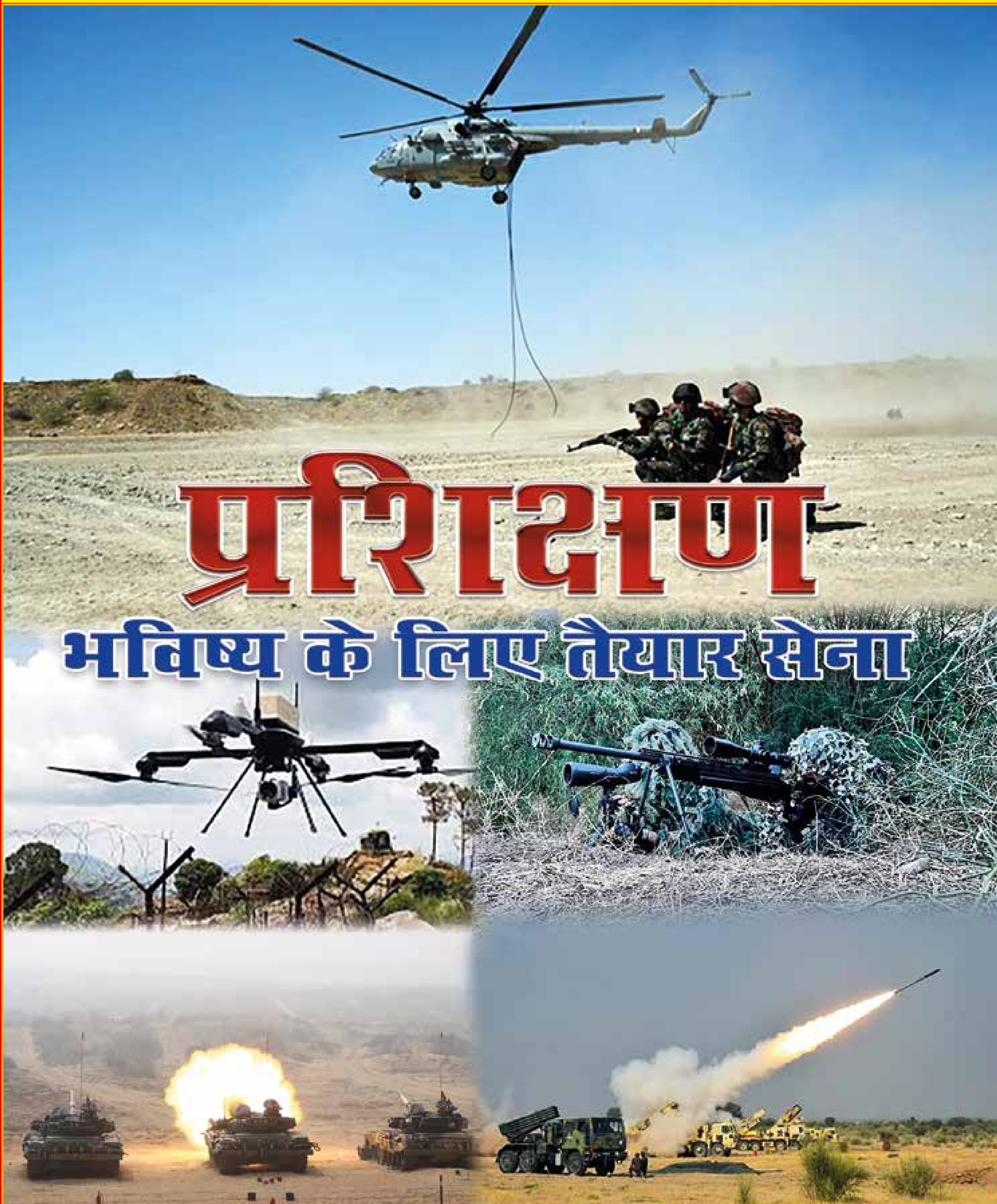

प्रशिक्षण
भविष्य के लिए तैयार सेना

सेना प्रशिक्षण कमान (एआरटीआरएसी)

सेना प्रशिक्षण कमान का विकास

एआरटीआरएसी का विजन

संयुक्तता और तकनीकी प्रगति के जटिल संचालन परिवेश में भविष्य की भारतीय सेना की 'प्रभावशीलता' को आकार देकर राष्ट्र की आवश्यकताओं की पूर्ति करना, ताकि सेना व्यावहारिक प्रशिक्षण, प्रभावी नेतृत्व विकास, मानव संसाधन प्रबंधन के माध्यम से 'निर्णायक रूप से विजय' और 'प्रभाव' स्थापित कर सके और उभरती सुरक्षा चुनौतियों का सामना करने के लिए आवश्यक सिद्धांतात्मक और वैचारिक परिवर्तनों को निरंतर परिभाषित करते हुए, सैन्य अभियानों की पूरी श्रृंखला में संचालन तैयारी सुनिश्चित करना।

युद्ध की कला और विज्ञान में उत्कृष्टता

सशस्त्र बल
भारतीय सेना

विजन @2047

उत्कृष्टता का युग - 2047

एकीकरण का युग - 2037

परिवर्तन का युग - 2032

त्रैमासिक 2025-29
परिवर्तन का दशक

संशोधन 2025 -
प्रौद्योगिकी समावेशन

थलसेनाध्यक्ष प्रशिक्षण निर्देश

सेना प्रमुख चार वर्षीय प्रशिक्षण निर्देश 2025-29

थलसेनाध्यक्ष प्रशिक्षण निर्देश पहले दो वर्ष में एक बार जारी किए जाते थे। दो वर्ष की अवधि दिशानिर्देशों के कार्यान्वयन/ठोस उपलब्धियों को प्राप्त करने के लिए बहुत कम मानी जाती थी। फॉर्मेशन/यूनिटों को निर्देशों को लागू करने के लिए पर्याप्त समय प्रदान करने हेतु, प्रशिक्षण वर्ष 2025-26 से थलसेनाध्यक्ष प्रशिक्षण निर्देश चार वर्ष की अवधि (चतुर्मासिक) पर जारी किए जा रहे हैं। पहला चार वर्षीय प्रशिक्षण निर्देश 01 अप्रैल 2025 को जारी किया गया है।

भारतीय सेना के प्रशिक्षण निर्देश

- लंबी अवधि को ध्यान में रखकर तैयार करना
- नीतियों में निरंतरता और एकरूपता बनाए रखना
- उन्नत प्रौद्योगिकी के समावेश की संरचना और पुष्टि हेतु उपयुक्त समय-सीमा प्रदान करना
- प्रशिक्षण कैलेंडर को सुव्यवस्थित रखना

थलसेनाध्यक्ष त्रैमासिकः 2025-29

थलसेनाध्यक्ष त्रैमासिक (सीओएएस क्यूटीडी) भारतीय सेना को कठोर प्रशिक्षण, उन्नत प्रौद्योगिकी का समावेश, तकनीकी श्रेष्ठता की समझ में अग्रणी रहने, रचनात्मक नेतृत्व प्रदान करने तथा भविष्य के युद्धों में स्पष्ट विजयी संकल्प के साथ अभियानों के सफलतापूर्वक संचालन की आधारशिला रखने में सहायता करेगा।

प्रशिक्षण की अवधारणा

प्रौद्योगिकी समावेशन योजनाएं

भारतीय सेना की परिवर्तन के दशक (डेकेड ऑफ ट्रांसफॉर्मेशन) योजना के अंतर्गत आधुनिकीकरण और प्रौद्योगिकी समावेशन एक प्रमुख स्तंभ है। इसी योजना के अनुरूप, मुख्यालय एआरटीआरएसी ने प्रशिक्षण में प्रौद्योगिकी के समावेशन के लिए एक मिशन शुरू किया है, जिसके अंतर्गत 14 श्रेणी 'ए' संस्थानों को सेंटर ऑफ एक्सपरटाइज (सीएसओई) के रूप में विकसित करने के लिए नामित किया गया।

प्रौद्योगिकी समावेशन की गति को बढ़ाने हेतु, इन नामित सीएसओई को 33 तकनीकों की जिम्मेदारी सौंपी गई है। एआरटीआरएसी ने प्रौद्योगिकी समावेशन के लिए व्यापक दिशानिर्देश तैयार किए हैं। इन दिशानिर्देशों के आधार पर वर्ष 2030 तक की एक दीर्घकालिक योजना बनाई गई है, जिसमें अपनाई जाने वाली तकनीकों, विकसित की जाने वाली संरचनाओं, मानव संसाधन कौशल विकास तथा वित्तीय व्यय का स्पष्ट उल्लेख किया गया है।

प्रौद्योगिकी समावेश के स्तंभ

- प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण
- बुनियादी ढांचे का निर्माण
- पाठ्यक्रम का निर्माण
- समझौते (एमओयू) और अनुसंधान एवं विकास (आर एंड डी) निधि के प्रावधान का लाभ उठाना
- नीतियों का पुनरीक्षण
- सार्वजनिक धन का उपयोग

प्रौद्योगिकी समावेशन के लिए विजन

प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में विशिष्ट प्रौद्योगिकियों को अपनाना, विकसित करना और आत्मसात करना, ताकि सीखने की प्रक्रिया को सुगम बनाया जा सके और संचालन के दौरान प्रौद्योगिकी का उपयोग कर तीव्र परिणाम प्राप्त किए जा सकें।

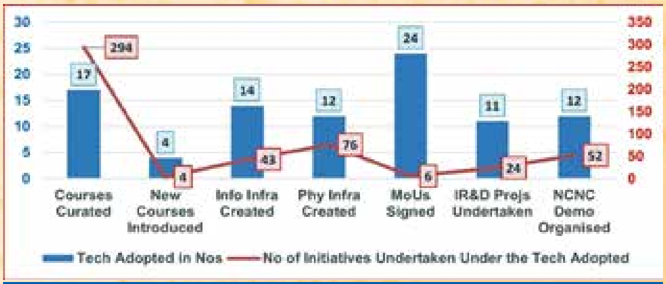

प्रौद्योगिकी समावेशन: 2024

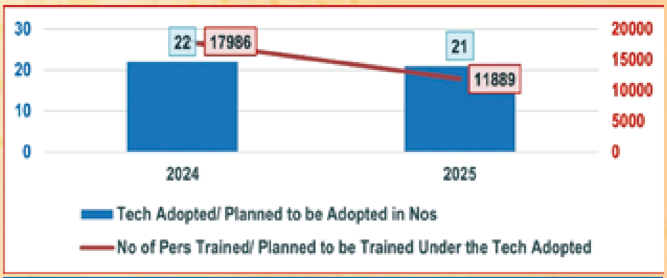

प्रशिक्षण आयोजित किया गया

2025 में प्रौद्योगिकी समावेशन की योजना बनाई गई

भारतीय सेना में ड्रोन संस्कृति

ड्रोन प्रशिक्षण का लाभ उठाने और संचालन क्षमता को बढ़ाने के लिए एआरटीआरएसी प्रशिक्षण बुनियादी ढांचे को उन्नत कर रहा है। एआरटीआरएसी ने ड्रोन और विरोधी ड्रोन अभियानों का प्रभावी लाभ उठाने के लिए आवश्यक कौशल के रूप में अपनाने की दिशा में कदम उठाए हैं, जैसे कि एक सैनिक के लिए राइफल संभालने का कौशल जरूरी होता है। प्रशिक्षण संस्थानों में ड्रोन और विरोधी ड्रोन ढांचे के निर्माण हेतु विशेष बल दिया गया है। पाठ्यक्रमों और प्रशिक्षण कार्यक्रमों में उत्कृष्ट प्रदर्शन को प्रोत्साहित करने के लिए ड्रोन को प्रोत्साहन पुरस्कार के रूप में देने की योजना भी बनाई गई है।

15 चयनित श्रेणी 'ए' प्रशिक्षण संस्थानों ने ड्रोन प्रशिक्षण के बुनियादी ढांचे के निर्माण/उन्नयन के लिए एक रोडमैप तैयार किया है।

बुनियादी ढांचा
ड्रोन सूची
ड्रोन प्रशिक्षण प्रयोगशालाएँ
ड्रोनोडोम
मॉड्यूलर ड्रोन प्रशिक्षण परिसर
विशिष्ट विध्वंसक प्रयोगशाला

अनुसंधान एवं विकास योजनाएं
लघु अनुसंधान परियोजनाएँ
मानवरहित तकनीक से युद्ध अभियानों की निगरानी (स्काउट)

ड्रोन पाठ्यक्रम

समझौता

मानव संसाधन कौशल उन्नयन
रिमोट पायलट प्रमाणपत्र
डीजीसीए प्रमाणन
ड्रोन निर्माण पाठ्यक्रम
एफपीवी ड्रोन उड़ान

प्रौद्योगिकी समावेश
डीजीसीए प्रशिक्षक प्रमाणपत्र
ड्रोन खेल

डीजीसीए आरपीटीओ

आर्मी ट्रेनिंग कमांड (एआरटीआरएसी) की योजनाएं

विदुर वक्ता - रेड टीमिंग

भारतीय सेना में रेड टीमिंग की अवधारणा अक्टूबर 2024 में शुरू की गई थी। इस पहल के तहत चुने गए 15 अधिकारियों के एक समूह के लिए तीन चरणों में प्रशिक्षण आयोजित किया गया, जिसे विदेशी स्माल एंड मीडियम इंटरप्राइजेज (एसएमईज) द्वारा संचालित किया गया। इस अवधारणा का परीक्षण विभिन्न संचालन संबंधित चर्चाओं के दौरान किया गया। विदुर वक्ता के लिए प्रशिक्षण और संस्थागत पाठ्यक्रमों के संचालन हेतु 2027 तक का रोडमैप तैयार किया गया है।

ऑनलाइन परीक्षाएँ

डिजिटल इंडिया मिशन के अंतर्गत, एआरटीआरएसी ने प्रतिस्पर्धात्मक एवं पदोन्नति परीक्षाओं को पारंपरिक प्रणाली से ऑनलाइन मोड में परिवर्तित करने हेतु एक रोडमैप तैयार किया है। परीक्षाओं के ऑनलाइन संचालन को सुचारु रूप से सुनिश्चित करने के लिए देशभर में 81 केंद्रों की स्थापना की गई है।

डिजिटल पुस्तकालय परियोजना

डिजिटल पुस्तकालय परियोजना एक प्रमुख परियोजना है, जो श्रेणी 'ए' प्रशिक्षण संस्थानों के परिसर में छात्रों को कहीं भी और कभी भी ऑनलाइन दो लाख से अधिक लेखों और सैन्य जर्नलों तक पहुंच प्रदान करने में सहायक है।

एकलव्य परियोजना

ऑनलाइन शिक्षण हेतु भारतीय सेना का पोर्टल

एकलव्य परियोजना एक दूरस्थ शिक्षा सॉफ्टवेयर है, जिसे आर्मी वॉर कॉलेज द्वारा बीआईएसएजी-एन के सहयोग से विकसित किया गया है। इसका उद्देश्य भारतीय सेना के सभी अधिकारियों के लिए 'व्यावसायिक सैन्य प्रशिक्षण' (पीएमई) को ऑनलाइन संचालित करना है। इस पोर्टल का उद्घाटन 28 नवम्बर 2024 को थलसेनाध्यक्ष द्वारा किया गया था। यह एप्लिकेशन तीन प्रकार के ऑनलाइन पाठ्यक्रमों को चलाता है: स्ट्रक्चर्ड प्री-कोर्सेज, स्पेशलिस्ट अपोइंटमेंट्स और विविध कोर्सेज। परियोजना के पहले चरण में 17 श्रेणी 'ए' प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा संचालित 96 पाठ्यक्रम पहले ही अपलोड किए जा चुके हैं।

'एकलव्य परियोजना' की प्रमुख बातें

- रोचक विषयवस्तु
- मानव संसाधन प्रबंधन में सहायक
- ऑफलाइन पाठ्यक्रम
- विशेष नियुक्ति प्रशिक्षण
- निरंतर व्यावसायिक सैन्य शिक्षा (पीएमई) को प्रोत्साहन
- स्वयं की गति से सीखना

समझौते (एमओयूज)

आईआईटी रोपर के साथ समझौता	आईआईटी रुड़की के साथ समझौता
बीआईटीएस के साथ समझौता	एसआरएम इंस्टीट्यूट के साथ समझौता
आईआईटी गुवाहाटी के साथ समझौता	आईआईआरएस, देहरादून के साथ समझौता

मुख्यालय एआरटीआरएसी

- शैक्षणिक और प्रशिक्षण संबंधी सभी समझौतों के लिए नोडल एजेंसी
- शैक्षणिक संस्थानों और उद्योग जगत की विशेषज्ञता का लाभ उठाने हेतु
- प्रौद्योगिकी समावेश और भविष्य के बदलाव के रोडमैप के अनुरूप समझौते
- 57 प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों के साथ समझौते

आर एंड डी परियोजनाएं । ड्रोन प्रौद्योगिकी
एआई एवं मशीन से सीखना । सूचना प्रौद्योगिकी
अकादमिक्स एवं प्रशिक्षण । साइबर सिक्यूरिटी
रिमोट सेंसिंग

सेमिनार एवं लीडरशिप कैप्सूल

स्ट्रैटेजिक फ्यूजन एवं कन्वर्जेन्स कैप्सूल

आर्मी वार कॉलेज मऊ में 24 से 28 मार्च 2025 तक आयोजित देश के पहले स्ट्रैटेजिक फ्यूजन एवं कन्वर्जेन्स कैप्सूल, जिसमें 11 विभिन्न एफएफसीज से 23 अधिकारियों, मंत्रालयों में तैनात अधिकारियों, केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल (सेंट्रल आर्म्ड पुलिस फोर्स) अधिकारियों तथा उद्योग एवं अकादमिक जगत के प्रतिनिधियों को भाग लेने का अवसर मिला।

इस कैप्सूल का उद्देश्य हायर कमांड कोर्स के प्रतिभागियों को राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति 'राष्ट्र के समग्र दृष्टिकोण' को समझने का अवसर प्रदान करना भी था।

26वीं सिद्धांत एवं रणनीति संगोष्ठी

आर्मी वॉर कॉलेज मऊ में आयोजित सिद्धांत एवं रणनीति संगोष्ठी रणनीतिक एवं सिद्धांत संबंधी महत्वपूर्ण विषयों पर विचार-विमर्श का एक मंच है।

27 एवं 28 नवम्बर 2024 को आयोजित 26वीं सिद्धांत एवं रणनीति संगोष्ठी का विषय था- 'हाल के संघर्षों एवं युद्ध में प्रौद्योगिकी के समावेशन की दृष्टि से भारतीय सेना के लिए अनुकूल सिद्धांत /संचालन विचारधारा की आवश्यकता।'

टेक्नो सीडीआर	स्कॉलर वारियर	सोल्जर स्टेट्समैन

प्रोफेशनल मिलिट्री एजुकेशन मॉडल

रणनीतिक नेतृत्व एवं भावी योजना कैप्सूल

भारतीय सेना के भावी नेतृत्व के लिए विशेष रूप से तैयार किया गया स्ट्रैटेजिक लीडरशिप एवं भावी योजना कैप्सूल का चौथा संस्करण, 14 से 17 जनवरी 2025 के दौरान मानेकशॉ सेंटर, दिल्ली में आयोजित किया गया। इसमें 25 वरिष्ठ अधिकारी (लेफ्टिनेंट जनरल/मेजर जनरल रैंक) तथा रक्षा मंत्रालय में तैनात चार संयुक्त सचिव स्तर के अधिकारी सम्मिलित हुए।

चीन संगोष्ठी

चीन संगोष्ठी का आयोजन 24-25 सितंबर 2024 को मानेकशॉ सेंटर, दिल्ली में सेंटर फॉर लैंड वारफेयर स्टडीज के सहयोग से किया गया। इस संगोष्ठी का उद्देश्य चीन की विभिन्न क्षेत्रों में क्षमताओं का गंभीरतापूर्वक विश्लेषण करना तथा भारत की सुरक्षा पर उनके प्रभावों को समझना था।

कारगिल विजय

कारगिल दिवस से पूर्व के कार्यक्रम

03 जुलाई 2025: पोइंट 4812 का अभियान

07 जून 2025: तोलोलिंग अभियान

16 जून 2025: मेडिकल कैंप, चिकतान

सरहद शौर्याथन 2025

20 जुलाई 2025 : मेडिकल कैंप, संकू

परिजनों के लिए विशेष संपर्क अभियान

भारतीय सेना ने 37 संपर्क दलों के माध्यम से 27 राज्यों, 2 केंद्र शासित प्रदेशों, तथा संघीय लोकतांत्रिक गणराज्य नेपाल में ह

दिवस 2025

शौर्य संध्या की कुछ झलकियां

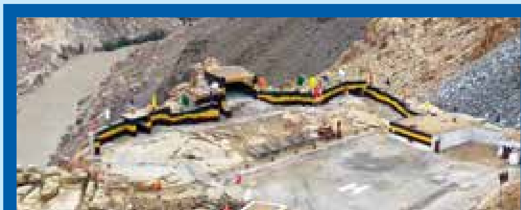

सिंधु दृष्टिकोण

थलसेनाध्यक्ष का संबोधन

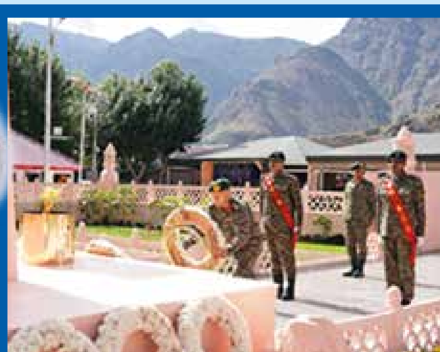

कारगिल युद्ध स्मारक

लामोचेन दृष्टिकोण

सीमावर्ती क्षेत्र में पर्यटन योजना

https://kargilwarmemorial.com/

ई-श्रद्धांजलि पोर्टल यूजर्स को मोबाइल, टैबलेट या आईपैड के माध्यम से वर्चुअल श्रद्धांजलि अर्पित करने की सुविधा प्रदान करता है।

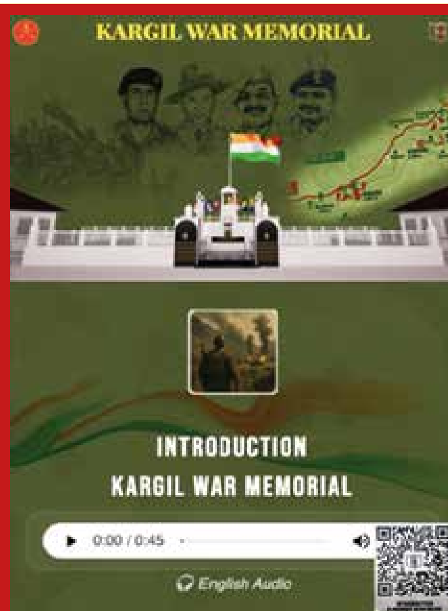

https://kargil.itant.in/introduction/

क्यूआर कोड आधारित मोबाइल ऑडियो गेटवे

थलसेनाध्यक्ष की वीरगति प्राप्त सैनिकों के निकट संबंधियों के साथ बातचीत

मारे वीरगति प्राप्त सैनिकों के 545 परिजनों (निकट संबंधियों) को उनके स्थानीय निवास स्थानों पर सम्मानित किया।

सेनाध्यक्ष पृष्ठ

सेनाध्यक्ष ने 01 जुलाई से 04 जुलाई 2025 तक भूटान का दौरा किया, जहाँ उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर प्रदान किया गया। यह यात्रा भारत और भूटान के बीच सुदृढ़ और स्थायी मित्रता को दर्शाती है।

ब्राजीलियाई सेना के लेफ्टिनेंट जनरल कार्लोस एडुआर्डो बारबोसा दा कोस्टा ने सेनाध्यक्ष से मुलाकात कर द्विपक्षीय रक्षा सहयोग को और सुदृढ़ करने, संयुक्त प्रशिक्षण, क्षमता निर्माण, एवं सूचना आदान-प्रदान के माध्यम से रणनीतिक साझेदारी को बढ़ावा देने पर चर्चा की।

सेनाध्यक्ष ने इंस्पेक्टर जनरल, असम राइफल्स (दक्षिण) से मुलाकात कर सुरक्षा स्थिति और ऑपरेशनल तैयारी की समीक्षा की।

सेनाध्यक्ष ने विश्व के सबसे ऊंचे युद्धक्षेत्र सियाचिन की अग्रिम चौकियों का दौरा किया और वहाँ तैनात 18 जम्मू एंड कश्मीर राइफल्स के वीर सैनिकों से बातचीत की। वह इस यूनिट की कमान संभालते थे।

थलसेनाध्यक्ष को 10 जुलाई 2025 को लेफ्टिनेंट जनरल शक्ति गुरुंग (सेवानिवृत्त) द्वारा 'ब्रेकिंग द ग्लास सीलिंग' नामक पुस्तक भेंट की गई।

सेनाध्यक्ष ने हाल ही में नियुक्त किए गए कमांड सूबेदार मेजरों से संवाद किया और स्थानीय स्तर पर नेतृत्व की महत्वपूर्ण भूमिका तथा बल की एकजुटता बनाए रखने में उनकी जिम्मेदारी पर बल दिया।

संक्षिप्त

26वें कारगिल विजय दिवस के उपलक्ष्य में 13 जम्मू एंड कश्मीर राइफल्स (कारगिल), 16 ग्रेनेडियर्स और भारतीय वायु सेना के वीर योद्धाओं ने टाइगर हिल पर तिरंगा फहराकर ऑपरेशन विजय और ऑपरेशन सफेद सागर के दौरान हमारे वीरों द्वारा प्रदर्शित अद्वितीय पराक्रम को श्रद्धांजलि अर्पित की।

दक्षिण पश्चिमी कमान ने सोसाइटी ऑफ इंडियन डिफेंस मैन्युफैक्चरर्स और सेंटर फॉर लैंड वारफेयर स्टडीज के सहयोग से जयपुर सैन्य स्टेशन पर 'नेक्स्ट जनरेशन कॉम्बैट: शेपिंग टूमॉरोज मिलिटरी' विषय पर तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया।

जुलाई 2025 में महिला अधिकारी कैडेटों का पहला बैच अपने पुरुष समकक्षों के साथ एक वर्षीय कठोर प्रशिक्षण के लिए भारतीय सैन्य अकादमी, देहरादून में शामिल हुआ।

19 जून से 3 जुलाई 2025 तक भारत-फ्रांस सैन्य अभ्यास शक्ति-VIII, फ्रांस के कैंप लार्जैक में आयोजित किया गया, जिसमें भारतीय सेना की 7वीं बटालियन, जम्मू और कश्मीर राइफल्स और फ्रांस की 13वीं डेमी-ब्रिगेड डी लीजन एट्रैंजेयर ने भाग लिया।

बाल्ड ईगल ब्रिगेड ने भुज में सीआईएसएफ कर्मियों के लिए दो सप्ताह का गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया, जिसका उद्देश्य उनके आतंकवाद-रोधी कौशल को निखारना, ड्रोन संचालन दक्षता को बढ़ाना और हवाई खतरों के विरुद्ध तुरंत जवाब देने की क्षमता विकसित करना था।

गोल्डन की डिवीजन के तहत सूर्या वॉरियर्स ने खानादुमटी फील्ड फायरिंग रेंज (14,000 फीट) में अपनी पहली एकीकृत फील्ड फायरिंग पूरी की।

पूर्व सैनिक कॉर्नर

थलसेनाध्यक्ष ने सेवानिवृत्त अधिकारियों के सेमिनार के दौरान नई दिल्ली में तीन प्रतिष्ठित पूर्व सैनिकों मेजर ए.के. सिंह (सेवानिवृत्त), मेजर टी.सी. राव (सेवानिवृत्त) और हवलदार रमेश गणपत खरमाले (सेवानिवृत्त) को 'वेटरन अचीवर्स अवार्ड' से सम्मानित किया।

आर्मी वेलफेयर प्लेसमेंट ऑर्गनाइजेशन ने डेल टेक्नोलॉजी एंड लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन के सहयोग से 9000 फीट की ऊँचाई पर स्थित लद्दाख स्काउट्स रेजिमेंटल सेंटर, लेह में एक डिजिटल साक्षरता केंद्र स्थापित किया है।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने राष्ट्रपति भवन में वीर नारियों और वीरगति प्राप्त सैनिकों की विधवाओं के एक समूह के साथ बातचीत की।

लेफ्टिनेंट जनरल प्रतीक शर्मा, सेना कमांडर एनसी ने पूर्व सैनिक समुदाय के उत्थान के लिए शुरू की गई योजनाओं की प्रगति का आकलन करने के लिए उत्तरी कमान के सभी पूर्व सैनिकों के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से एक बैठक की अध्यक्षता की।

आर्मी वेलफेयर प्लेसमेंट ऑर्गनाइजेशन ने 4 जुलाई 2025 को दिल्ली में एचआर कॉन्क्लेव का आयोजन किया, जिसका उद्देश्य सेना के पूर्व सैनिकों, विधवाओं, आश्रितों और आश्रितों के लिए द्वितीय कैरियर इकोसिस्टम को मजबूत करना था।

इस माह का उपकरण

उन्नत टोड आर्टिलरी गन सिस्टम

भारत का उन्नत टोड आर्टिलरी गन सिस्टम (एटीएजीएस) एक शक्तिशाली 155 मिमी, 52-कैलिबर हॉवित्जर है जिसे स्वदेशी रूप से विकसित किया गया है और यह आत्मनिर्भरता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह डीआरडीओ, भारत फोर्ज और टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स का एक संयुक्त प्रयास है। एटीएजीज न केवल अपने स्वदेशी विकास के लिए, बल्कि अपनी अत्याधुनिक विशेषताओं के लिए भी विशिष्ट है जो रेंज, सटीकता और प्रदर्शन के मामले में अपने समकालीन अधिकांश हॉवित्जर से बेहतर प्रदर्शन करती हैं।

मुख्य विशेषताएँ

- **कैलिबर:** 155 मिमी, 52 कैलिबर।
- **रेंज:** 45 किमी तक।
- **वजन:** 19.5 टन।
- **फायर रेट:** 5-6 राउंड/मिनट (बर्स्ट)
- **चालक दल:** 6-8 कर्मी।

तकनीकी बढ़त

- आल इलेक्ट्रिक ड्राइव जिसका अर्थ है अधिक सुचारू, अधिक विश्वसनीय प्रदर्शन और आसान रखरखाव।
- थर्मल इमेजिंग के साथ उन्नत फायर नियंत्रण प्रणाली।
- सटीक टारगेट के लिए जीपीएस नेविगेशन।
- पूर्णतः स्वचालित गोला-बारूद संचालन प्रणाली, जो संचालन को गति प्रदान करती है और थकान कम करती है।
- इसके 80 प्रतिशत उपकरण भारत में निर्मित हैं, यह आत्मनिर्भरता की दिशा में एक बड़ा कदम है।

भारतीय सेना में भूमिका

एटीएजीएस को विविध भौगोलिक परिस्थितियों जैसे रेगिस्तान से लेकर पर्वतीय क्षेत्रों में उच्च प्रदर्शन के लिए डिजाइन किया गया है। इसकी लंबी मारक क्षमता, सटीकता, और त्वरित तैनाती इसे आधुनिक युद्धक्षेत्र के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बनाती है। एटीएजीएस जैसी अत्याधुनिक प्रणाली का शामिल किया जाना, भारतीय आर्टिलरी के मध्यमीकरण के द्वारा आधुनिकीकरण की दिशा में एक बड़ा कदम है।

खालरा का युद्ध

(3/4 दिसंबर 1971)

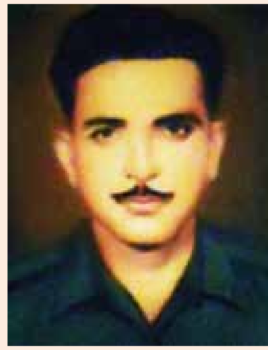

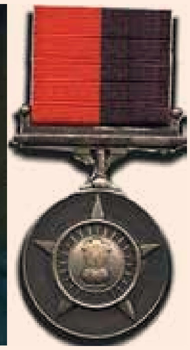

लांस हवलदार रघबीर सिंह
वीर चक्र (मरणोपरांत)

दिसंबर 1971 में, 14 जम्मू एंड कश्मीर राइफल्स को खालरा और उस पर बने महत्वपूर्ण पुलों की रक्षा की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। ऊपरी बारी दोआब नहर (यूबीडीसी) के पूर्वी तट पर स्थित खालरा नगर, लाहौर-भिकिविंड-हरिके एक्सिस पर एक महत्वपूर्ण सामरिक केंद्र थी, जो हरिके हेडवर्क्स और ग्रैंड ट्रंक रोड के प्रवेश द्वार की रक्षा करती थी। 1971 के भारत-पाक युद्ध के शुरुआती घंटों में, पाकिस्तानी सेना ने खालरा पर कब्जा करने और हरिके की ओर आगे बढ़ने के लिए एक जोरदार आक्रमण शुरू किया।

14 जम्मू एंड कश्मीर राइफल्स 3-17 दिसंबर तक लगातार तोपखाने, छोटे हथियारों की गोलाबारी और दुश्मन की घुसपैठ के बीच हमलों के खिलाफ मजबूती से डटी रही। बटालियन की सुरक्षा खालरा और यूबीडीसी को जोड़ने वाले प्रमुख पुल के आसपास केंद्रित थी। पाकिस्तानी गोलाबारी से भाग रहे नागरिकों ने अनजाने में दुश्मन सैनिकों को कवर प्रदान किया, जिन्होंने फिर पुल पर हमला करने की कोशिश की।

03/04 दिसंबर की रात को लांस हवलदार रघबीर सिंह ने खालरा पुल की करीबी सुरक्षा के लिए तैनात एक सेक्शन की कमान संभालते हुए असाधारण बहादुरी और साहस का परिचय दिया। तीव्र गोलाबारी और नजदीकी लड़ाई के बीच वह खाइयों को पार करते हुए आगे बढ़े, गोलीबारी का नेतृत्व किया और अपने जवानों को दृढ़तापूर्ण साहस के साथ प्रेरित करते रहे। जब पाकिस्तानी सैनिकों ने पुल को पार करने की कोशिश की तो उन्होंने सबसे आगे बढ़कर निडरता के साथ अपने सैनिकों का नेतृत्व किया।

शत्रु का दबाव लगातार बढ़ता जा रहा था और पुल को ध्वस्त करने के आदेश की प्रतीक्षा की जा रही थी, तब भी लांस हवलदार रघबीर सिंह अपने मोर्चे पर अडिग डटे रहे। वे एक खाई से दूसरी खाई तक लड़ते हुए, अपने जवानों का उत्साहवर्धन करते रहे और उनकी फायरिंग को निर्देशित करते हुए दुश्मन के हमले को पीछे धकेलने में लगे रहे।

जब दुश्मन का दबाव बहुत बढ़ गया, तब उन्होंने 04 दिसंबर 1971 को प्रातः 0435 बजे खालरा पुल को उड़ा दिया, जबकि वह छोटे हथियारों की गोलियों से घायल हो गए थे। इस परम वीरता के कार्य में वह नजदीक से चली एमएमजी (मध्यम मशीन गन) की गोलियों की बौछार से गंभीर रूप से घायल हो गए और उन्होंने भारतीय सेना की सर्वोच्च परंपराओं का पालन करते हुए अपने प्राणों का बलिदान दे दिया।

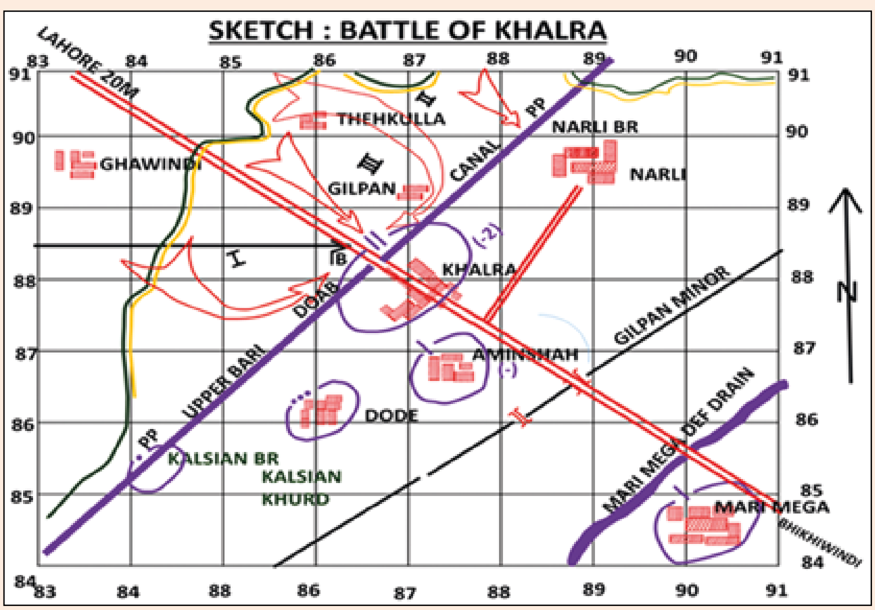

उनकी वीरतापूर्ण अडिगता ने दुश्मन को पुल पर पूरी तरह कब्जा करने से रोक दिया और उनके आक्रामक अभियान को विफल कर दिया। उनके बलिदान ने खालरा की सुरक्षा की अखंडता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और पूरे युद्ध के दौरान बटालियन के दृढ़ रुख का आधार तैयार किया। उनकी असाधारण बहादुरी, गोलाबारी के बीच नेतृत्व और सर्वोच्च बलिदान के लिए, लांस हवलदार रघबीर सिंह को मरणोपरांत वीर चक्र से सम्मानित किया गया।

विज्ञप्ति

एजीआईएफ योजनाओं में संशोधन

- **नियमित सेना और प्रादेशिक सेना के लिए बीमा कवर में वृद्धि।** एजीआईएफ एक अनिवार्य समूह बीमा सह बचत योजना है, जिसकी शुरुआत सैन्य कर्मियों को सेवा के दौरान युद्ध/युद्ध जैसी स्थितियों सहित सभी जोखिमों के विरुद्ध जीवन बीमा कवर प्रदान करने और उनकी वित्तीय स्थिति को बेहतर बनाने के लिए सेवानिवृत्ति/मुक्ति/सेवामुक्ति के समय एकमुश्त परिपक्वता लाभ प्रदान करने के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए की गई है। मासिक सदस्यता में जोखिम तत्व और बचत शामिल हैं। 01 अप्रैल 2025 से प्रभावी वर्तमान बीमा कवर की बारीकियाँ इस प्रकार हैं:-

श्रेणी	सब्सक्रिप्शन (₹)	लाभ (₹)	
		बीमा (₹)	विकलांगता (₹) *
नियमित सेना (01 अप्रैल 2025 से संशोधित)			
अधिकारी	12,500/- प्रतिमाह	125 लाख	25 लाख
जेसीओ/ओआर	7,500/- प्रतिमाह	75 लाख	12.5 लाख
टेरिटोरियल आर्मी (टीए) (01 अप्रैल 2025 से संशोधित)			
अधिकारी	72,000/- प्रतिमाह	75 लाख	25 लाख
जेसीओज/ओआर	36,000/- प्रतिमाह	37.5 लाख	12.5 लाख
आर्मी पोस्टल सर्विसेज (एपीएस)			
अधिकारी	5,190/- प्रतिमाह	75 लाख	25 लाख
जेसीओ/ओआर	2,525/- प्रतिमाह	37.5 लाख	12.5 लाख
डिफेंस सिक्यूरिटी कोर (डीएससी)			
जेसीओ/ओआर	2,590/- प्रतिमाह	37.5 लाख	12.5 लाख
नोट:- *दिखाई गई विकलांगता राशि 100 प्रतिशत विकलांगता के लिए है और 20 प्रतिशत विकलांगता होने तक अनुपातिक रूप से कम होती जाती है। यह केवल उन लोगों पर लागू है जिन्हें इनवैलिडमेंट मेडिकल बोर्ड (आईएमबी) द्वारा सेवा से अयोग्य घोषित कर दिया गया है, जिनकी सेवा अवधि कम कर दी गई है और जो किसी भी प्रकार की पेंशन प्राप्त नहीं कर रहे हैं। यह नीति 01 मई 2018 से लागू है।			

- **विस्तारित बीमा कवर में वृद्धि।** 01 अप्रैल 2025 को या उसके बाद सेवानिवृत्त होने वाले सभी सदस्यों के लिए नियमित सेना सेवानिवृत्ति के बाद के लिए ईआई को बढ़ा दिया गया है।

श्रेणी	एकमुश्त प्रीमियम (₹)	ईआई कवर (₹)	अवधि
अधिकारी	2,75,000/- (वापसी योग्य)	30 लाख	सेवानिवृत्ति के 26 वर्ष बाद या 80 वर्ष की आयु तक, जो भी पहले हो।
जेसीओज/ओआर	1,20,000/- (वापसी योग्य)	15 लाख	सेवानिवृत्ति के 30 वर्ष बाद या 75 वर्ष की आयु तक, जो भी पहले हो।

- **ऋण/अग्रिम।** अधिकारियों, जेसीओ और ओआर के लिए गृह निर्माण अग्रिम (एचबीए) की अधिकतम सीमा 01 अप्रैल 2025 से बढ़ा दी गई है। वाहन अग्रिम (सीए) और पर्सनल कंप्यूटर अग्रिम (पीसीए) के संदर्भ में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है।

योजना	अधिकारी	जेसीओ/ओआर
गृह निर्माण अग्रिम (एचबीए)		
निर्माण/खरीद	₹100 लाख / 7.5%	जेसीओज ₹50 लाख ओआर ₹40 लाख } @7%
मरम्मत एवं जीर्णोद्धर	₹20 लाख / 8%	₹20 लाख / 7.5%
निर्माण/खरीद के लिए दूसरा एचबीए	शेष राशि के लिए पहले एचबीए के पूर्ण होने पर। अन्य शर्ते उसी तरह हैं	
एनडीजी के लिए एचबीए जैसे अन्य सदस्यों के लिए अनुमति है लागू है		

- **सेवा निर्धारित मानदंड (01 अप्रैल 2025 से प्रभावी)।** हाउस बिल्डिंग एडवांस (एचबीए) के लिए, अधिकारियों के लिए न्यूनतम एक वर्ष और जेसीओज/ओआर के लिए एक वर्ष की नियमित कैडर सेवा। कन्वेयन्स एडवांस (सीए) और पर्सनल कंप्यूटर एडवांस (पीसीए) के लिए, अधिकारियों के लिए कमीशनिंग पर और जेसीओज/ओआर के लिए न्यूनतम एक वर्ष की नियमित कैडर सेवा।

IndianOil

DURAND CUP

SINCE 1888

134 TH EDITION - 2025

POWERED BY

SBI

Coal India Limited
A Maharatna Company

डूरंड सितारे
सुनील छेत्री, शिवशक्ति नारायणन,
श्याम थाप

डूरंड सितारे
चुन्नी गोस्वामी, बाईचुंग भूटिया,
संदेश झिंग

कोलकाता

शिलांग

इम्फाल

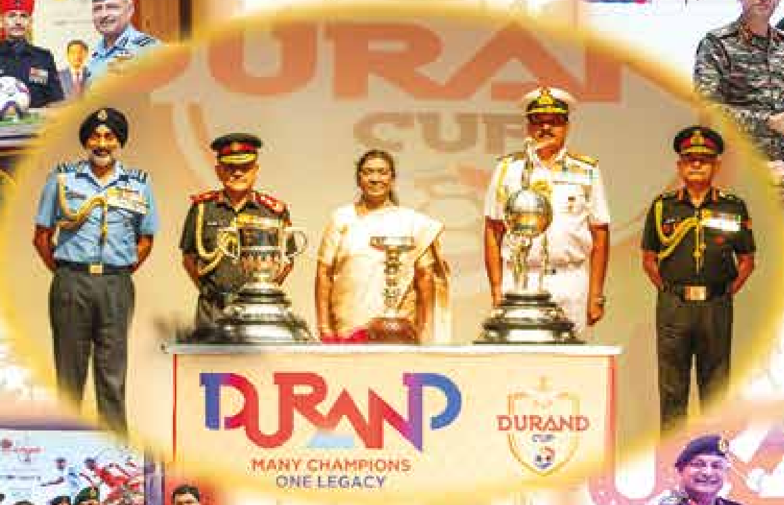

राष्ट्रपति भवन

जमशेदपुर

कोकराझार

सपनों की विरासत, संभावनाओं का मंच

137 वर्षों से, डूरंड कप केवल एक टूर्नामेंट से कहीं अधिक रहा है – यह भारत की सबसे प्रतिभाशाली फुटबॉल प्रतिभाओं के लिए एक लॉन्चपैड रहा है। देश के कई महान खिलाड़ियों ने पहली बार डूरंड के मैदान पर अपनी पहचान बनाई। इसकी स्थायी विरासत भारत भर के अज्ञात खिलाड़ियों और क्लबों को प्रतिस्पर्धा करने, पहचान बनाने और अपने सपनों को साकार करने का अवसर प्रदान करने में निहित है। एक सच्चे राष्ट्र-निर्माण मंच के रूप में यह महत्वाकांक्षी फुटबॉलरों को देश के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने सीखने, विकसित होने और भावी पीढ़ियों को प्रेरित करने का अवसर देता है।

5 राज्यों में 6 पूल में विभाजित 24 टीमें 6 स्टेडियमों में 32 दिनों में 43 मैच खेलेंगी
सोनी स्पोर्ट्स नेटवर्क और सोनी लिव पर 23 जुलाई से 23 अगस्त 2025 तक लाइव प्रसारण

thedurandcup

जानकारी के लिए संपर्क करें
प्रकाशक: स्ट्रेटजिक कम्युनिकेशन, रक्षा मंत्रालय (सेना), आईएचक्यू का अतिरिक्त महानिदेशालय
संपादक बातचीत ईमेल: editorbaatcheet@gmail.com
संपर्क नंबर: 011-23018665
प्रिंटर: एनीथिंग प्रिंटर, **फोन:** 011-45685718

BAATCHEET